जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जून 2025 ।। अंक – 59 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

बैंक सखी से बनी सशक्त महिला की पहचान (पृष्ठ – 02)

संघर्ष से स्वावलंबन तक एक प्रेरणादायक सफर (पृष्ठ – 03)

पिंकी देवी : समूह से नेतृत्व तक का प्रेरणादायक सफर (पृष्ठ – 04)

गाँव–गाँव तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच और महिला सशक्तीकरण की मिसाल

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं की पहुँच वर्षों से एक बड़ी चुनौती रही है। विशेष रूप से महिलाएँ, वृद्धजन और सीमांत वर्ग के लोग बैंक से जुड़ी बुनियादी सुविधाओं से वंचित रहते आए हैं। इन्हीं समस्याओं का समाधान लेकर आई हैं बैंक सखी। जिसे बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) द्वारा राज्य भर में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। यह पहल न केवल बैंकिंग सेवाओं को आमजन तक पहुँचाने का कार्य कर रही है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाकर उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता भी प्रदान कर रही हैं।

बैंक सखी जीविका से जुड़ी हुई ऐसी महिला होती है, जो अपने गाँव या पंचायत में डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करती हैं। वह डिजी–पे मशीन या माइक्रो एटीएम जैसे उपकरणों के माध्यम से अपने समुदाय को बैंक से जुड़ी सुविधाएँ जैसे खाता खोलना, नकद जमा और निकासी, सरकारी योजनाओं का भुगतान, बीमा और पेंशन सेवाएँ इत्यादि उपलब्ध कराती हैं। इस कार्य के लिए उन्हें जीविका के माध्यम से प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और वित्तीय मदद उपलब्ध कराई जाती है एवं बैंकिंग संस्थानों से जोड़ा जाता है।

बैंक सखी द्वारा दी जाने वाली प्रमुख सेवाएँ :–

- बचत खाता खोलना।
- बचत खाता में नकद राशि जमा करना व निकालना।
- प्रधानमंत्री जनधन योजना, बीमा योजनाओं की जानकारी व पंजीकरण।
- आधार से संबंधित सेवाएँ।
- मोबाइल रिचार्ज व बिजली बिल भुगतान।
- नकद रहित लेन–देन को बढ़ावा देना।
- सरकारी योजनाओं की राशि की निकासी में सहायता।

बिहार में बैंक सखी ने ग्रामीण बैंकिंग सेवाओं को घर–घर पहुँचाने का कार्य कर एक नई मिसाल कायम की है। राज्य भर में कुल 6108 बैंक सखियाँ सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं, जो अपने–अपने पंचायतों में बैंकिंग सेवाओं की सुलभता सुनिश्चित कर रही हैं। इन बैंक सखियों ने अब तक 10,40,615 नए बैंक खाते खोलकर उन परिवारों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा है, जो पहले इससे पूरी तरह वंचित थे।

इसके साथ ही, बैंक सखियों के द्वारा कुल 344 लाख का वित्तीय लेन–देन किए गए हैं, जिनकी कुल राशि 15,300.44 करोड़ रुपये से अधिक है। यह आँकड़ा यह दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं की भारी माँग थी, जिसे बैंक सखियों ने पूरी गंभीरता से पूरा किया। इतना ही नहीं, इस कार्य के माध्यम से बैंक सखियों ने 37.06 करोड़ रुपये बतौर कमीशन अर्जित किया है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और वे आत्मनिर्भर बनी हैं।

बैंक सखी योजना ने न केवल वित्तीय समावेशन को सशक्त बनाया है, बल्कि महिलाओं को सशक्त, प्रशिक्षित और सम्मानित कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया है। ये आँकड़े केवल संख्या नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव की कहानी है। जो बिहार के गाँवों में महिला सशक्तीकरण के माध्यम से लिखी जा रही है।

बैंक सखी से बनी सशक्त महिला की पहचान

भागलपुर जिले के कहलगांव प्रखंड की एक सामान्य महिला–अरूणा हीना ने बैंक सखी बनकर न केवल अपने जीवन की दिशा बदली, बल्कि समाज में भी एक सशक्त पहचान बना ली। पहले उनके पति मनरेगा में मजदूरी करते थे, जिससे छह सदस्यीय परिवार का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता था। आय सीमित और खर्च अधिक होने के कारण परिवार पर 50,000 रूपये का कर्ज हो गया था।

वर्ष 2017 में उन्होंने काली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर साप्ताहिक बचत शुरू की। समूह से ऋण लेकर उन्होंने महाजन से लिए कर्ज को धीरे–धीरे चुका दिया। आत्मनिर्भर बनने की चाह में उन्होंने बैंक सखी बनने की राह पकड़ी। पढ़ी–लिखी होने के कारण उन्होंने आवेदन किया और 1 जून 2020 को उनका चयन फिनो पेमेंट बैंक के तहत बैंक सखी के रूप में किया गया।

प्रशिक्षण के बाद उन्होंने 21 जुलाई 2021 से ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन शुरू किया। उनके कुशल व्यवहार और भरोसे ने उन्हें पंचायत की एक भरोसेमंद बैंकिंग प्रतिनिधि बना दिया है। आज उनके ग्राहक सेवा केंद्र पर प्रतिदिन 40–50 ग्राहक आते हैं और वे हर महीने औसतन 1800 से ज्यादा लेन–देन कर लेती हैं। अब तक उनके माध्यम से 17.97 करोड रूपये से अधिक का लेन–देन हो चुका है। इस कार्य से वह प्रतिमाह 13,000 से 15,000 रूपये की आमदनी अर्जित कर रही हैं।

इस आमदनी से अब उनके परिवार की स्थिति सुधर गई है। बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं और जीवन में खुशहाली लौट आई है। बैंक सखी बनने से न केवल उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, बल्कि उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिंग सेवाओं की पहुँच बढ़ाकर समाज के विकास में भी अहम योगदान दिया है।

तंजावुर चित्रकला से जीवन में भरा खुशियों का रंग

शेखपुरा जिले के गगरी पंचायत स्थित गुन्हेशा गांव की एक साधारण महिला कृष्णा देवी ने अपने हुनर और जीविका के सहयोग से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश की है। पहले चेन्नई में पति के साथ रहकर एक फैक्ट्री में काम करने वाली इस महिला ने मकान मालिक से तंजावुर पेंटिंग और हैंड पेंटिंग की कला सीखी और बाद में इसे उसने अपने रोजगार का माध्यम बना लिया।

साल 2020 में कोरोना महामारी के कारण वे परिवार सहित बिहार लौट आईं। बेरोजगारी और भुखमरी की कगार पर पहुंचे इस परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया। ऐसे समय में उन्होंने अपने सीखे हुए हुनर को आजीविका का साधन बनाया और घर से ही तंजावुर चित्रकला का कार्य शुरू किया।

वर्ष 2022 में वे जीविका से जुड़ीं और 'तुलसी जीविका स्वयं सहायता समूह' से ऋण लेकर अपने काम को आगे बढ़ाया। धीरे–धीरे उनकी कलाकृतियों को बाजार में पहचान मिलने लगी और लोग उनके बनाए गए भगवान एवं महापुरुषों के चित्रों को पसंद करने लगे।

जीविका के माध्यम से उन्हें राज्य और देश के विभिन्न सरस मेले में भाग लेने का अवसर मिला। पटना के गांधी मैदान और ज्ञान भवन से शुरुआत करते हुए रांची, नोएडा, भुवनेश्वर और गुरुग्राम जैसे शहरों तक अपनी कला पहुंचाई। अब तक वे लगभग 28 लाख रूपये से अधिक की कलाकृतियाँ बेच चुकी हैं और 14 लाख रूपये से अधिक की शुद्ध आमदनी अर्जित कर चुकी हैं।

आज उनके दोनों बच्चे पढ़ाई करते हैं एवं उनका परिवार खुशहाल है। वह अब खुद अन्य महिलाओं को भी तंजावुर पेंटिंग सिखा रही हैं।

संघर्ष से स्वावलंबन तक एक प्रेरणादायक सफर

लखीसराय जिले के चानन प्रखंड के भंडारा गांव की ममता देवी आज ग्रामीण महिला सशक्तीकरण की मिसाल बन चुकी हैं। एक समय था जब ममता अपने पति के साथ खेतों में मजदूरी कर किसी तरह तीन बच्चों का पालन–पोषण कर रही थीं। कभी–कभी तो काम न मिलने के कारण उन्हें भूखे भी सोना पड़ता था। ऐसे कठिन हालात में गाँव की महिलाओं ने उन्हें 'शीतल जीविका स्वयं सहायता समूह' से जुड़ने की सलाह दी।

अप्रैल 2015 में समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने हर हफ्ते 10 रुपये की बचत शुरू की। इसके बाद समूह से 20,000 रुपये का ऋण लेकर अपनी झोपड़ी में ही एक छोटी सी किराना दुकान का संचालन प्रारंभ किया। दुकान से हुए मुनाफे ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। ममता ने पट्टे पर खेत लेकर चावल, गेहूं, मकई, दाल की खेती शुरू की। इसके अलावा वह भूसा का व्यवसाय भी करने लगी।

समूह से मिले मार्गदर्शन से प्रेरित होकर उन्होंने दो गायें खरीदीं, जिनसे वे प्रति माह 40–50 लीटर दूध बेचकर 10 से 12 हजार रुपये का मुनाफा कमा रही हैं। खेती और किराना से भी उन्हें 10 से 12 हजार रुपये का अतिरिक्त लाभ होता है। ममता अब तीनों गतिविधियों से हर महीने तकरीबन 30 हजार रुपये से अधिक कमा रही हैं।

उनके तीनों बच्चे आज स्कूल में पढ़ रहे हैं और उनका परिवार खुशहाल जीवन जी रहा है। ममता आज गाँव की महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वह अपने आत्मनिर्भर जीवन का श्रेय जीविका और स्वयं सहायता समूह को देती हैं, जिसने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्हें सम्मान और पहचान दिलाई है।

मिठाई दुकान से जीवन में घुली मिठास

सीतामढ़ी जिले के बथनाहा प्रखंड के रनौली पंचायत की मीना देवी पहले अपने परिवार के साथ आर्थिक तंगी में जीवन बिता रही थीं। उनके पति संतोष महतो गांव में एक अन्य व्यक्ति की दुकान में काम करते थे, जिससे परिवार की आमदनी बहुत कम थी। तीन बच्चों की परवरिश और शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों से मीना देवी काफी परेशान रहा करती थीं।

वर्ष 2020 में उन्होंने 'हनुमान जीविका स्वयं सहायता समूह' से जुड़कर 'जनता जीविका महिला ग्राम संगठन' और 'उपकार जीविका संकुल स्तरीय संघ' के माध्यम से नई दिशा पाई। समूह से जुड़ने के बाद उन्हें परिवार की आजीविका के संवर्धन हेतु मार्गदर्शन मिला। मीना देवी ने अपनी रुचि के अनुसार मिठाई की दुकान खोलने की इच्छा जाहिर की और समूह से 10,000 रूपये ऋण लेकर अपने सपने की शुरुआत की।

धीरे–धीरे उनकी मेहनत रंग लाई। अब मीना देवी प्रतिमाह 25,000 से 30,000 रुपये तक की आमदनी कर रही है। इससे न केवल उनका परिवार अच्छे से चल रहा है, बल्कि उनके बच्चे भी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

मीना देवी अब आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं। वह सोचती हैं कि पहले लिए गए ऋण को जल्द ही चुका कर वह एक बार फिर से समूह से ऋण लेकर अपनी मिठाई दुकान में पूंजी निवेश करेगी, जिससे व्यवसाय का विस्तार हो और आय में और वृद्धि हो सके।

मीना देवी की यह सफलता जीविका के सहयोग, समूह की ताकत और उनकी खुद की मेहनत का परिणाम है। आज वह अपने गांव की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जीविका के माध्यम से वह अपने जीवन को नये स्वरूप में गढ़ रही हैं।

पिंकी देवी
समूह से नेतृत्व तक का प्रेरणादायक सफर

खगड़िया जिला के सदर प्रखंड अंतर्गत गंगौर पंचायत की रहने वाली पिंकी देवी की कहानी संघर्ष, आत्मबल और सामुदायिक संगठन के सहयोग से मिली सफलता का जीता–जागता उदाहरण है। एक समय था जब पिंकी देवी की पारिवारिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उनके पति बेरोजगार थे और घर में खाने–पीने तक की दिक्कत थी। बच्चों की परवरिश और घर का खर्च चलाना बहुत मुश्किल हो गया था।

ऐसे कठिन समय में वर्ष 2010 में पिंकी देवी ने जीविका के 'स्वयं सहायता समूह' से जुड़ने का निर्णय लिया। समूह की नियमित बैठकों में भाग लेना, प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से शामिल होना और निर्धारित बचत करना उनकी आदत में शामिल हो गया। धीरे–धीरे उन्होंने समूह से ऋण लेकर आर्थिक गतिविधियों की शुरुआत की। सबसे पहले उन्होंने गाय खरीदी, फिर पट्टे पर जमीन लेकर कृषि कार्य प्रारंभ किया। उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने ट्रैक्टर भी खरीद लिया।

अब तक पिंकी देवी ने समूह से कुल 3,26,000 रूपये का ऋण लिया है, जिसे वे समय पर चुकाती रही हैं। आय के स्रोत बढ़ने से उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो गई। अपने बेटे को उच्च शिक्षा के लिए आईआईटी गुवाहाटी में नामांकित कराना उनके लिए गर्व की बात है।

पिंकी देवी की सक्रियता, नेतृत्व क्षमता और सामुदायिक कार्यों में रुचि को देखते हुए उन्हें 'संस्कार जीविका संकुल स्तरीय संघ' की अध्यक्ष के रूप में चुना गया। इस संकुल संघ के अंतर्गत 64 ग्राम संगठनों के 819 स्वयं सहायता समूहों से 11,351 महिलाएँ जुड़ी हुई हैं।

अध्यक्ष के रूप में पिंकी देवी ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। अब तक 21 दीदियों को कृषि संयंत्र इकाई से जोड़ा गया है। 721 दीदियों को मनरेगा जॉब कार्ड से जोड़कर उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाया गया। 11,351 दीदियों के घरों में शौचालय निर्माण करवा कर उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। 5,670 दीदियाँ नल–जल योजना से लाभान्वित हो चुकी हैं और 5,681 दीदियों को इसका लाभ देने की प्रक्रिया जारी है।इसके अतिरिक्त, 4,142 दीदियों को पेंशन का लाभ मिल रहा है और 307 दीदियाँ जन वितरण प्रणाली से लाभान्वित हो रही हैं। संकुल संघ से जुड़े सभी 819 स्वयं सहायता समूहों को परिक्रमी निधि, आरंभिक पूंजीकरण निधि और बैंक ऋण से सहायता प्राप्त हुई है। 64 ग्राम संगठन खाद्य सुरक्षा निधि और 56 ग्राम संगठन स्वास्थ्य सुरक्षा निधि से लाभान्वित हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत संकुल संघ से जुड़ी 109 दीदियाँ लाभान्वित हो रही हैं। वर्तमान में 5,768 सदस्य कृषि और 4,367 सदस्य पशुपालन से जुड़े हुए हैं। पिंकी देवी ने सभी दीदियों को तीन से चार आजीविका गतिविधियों से जोड़ने और उनकी मासिक आमदनी 10,000 से 12,000 रूपये तक पहुंचाने की पाँच वर्षीय योजना बनाई है। उनका सपना है कि हर दीदी आत्मनिर्भर और लखपति बने।

पिंकी देवी को विश्वास है कि "हमारा गाँव स्वच्छ, सुंदर, शिक्षित और भेदभाव मुक्त होगा, जहाँ सभी महिलाएँ संगठित, आत्मनिर्भर, सम्मानित होंगी और गाँव के सर्वांगीण विकास के लिए मिलकर काम करेंगी।"

उनका यह संकल्प न सिर्फ उनके अपने जीवन की दिशा बदल रहा है, बल्कि हजारों महिलाओं को सशक्त बनाकर उनके भविष्य को भी उज्ज्वल बना रहा है। पिंकी देवी आज ग्रामीण महिला नेतृत्व की एक सशक्त प्रतीक बन चुकी हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार